राजेन्द्रसूरि जन्म सार्ध शताब्दि ग्रन्थ (फोल्डर नं. ०१२०३९)

मुख्य टाइटल

प्रथम खण्ड

भक्ति का जीवन्त प्रतीक यह ग्रन्थ

प्रकाशकीय

सम्पादकीय

विषय-सूची

शुभ कामना

श्रद्धाजलि

द्वितीय खण्ड – गुरुदेव-कृतित्व, व्यक्तित्व परम्परा ---------- ३-८०

तृतीय खण्ड – समाज दर्शन ---------- ३-३०

चतुर्थ खण्ड – जैन तत्त्व-ज्ञान-दर्शन

पार्श्व और महावीर का शासन भेद – मुनि नथमलजी ----------३

महावीर-जीवन और मुक्ति के सूत्रकार – प्रो. जयकुमार ---------- ७

महावीर की महिमा - लक्ष्मीचन्द्रजी ----------१३

महावीर की वाणी – श्री कैलाश ---------- १५

अमीक्ष्ण ज्ञानोपयोग – उपाध्याय विद्यानन्द मुनि ---------- १६

तीन मुक्तक – दिलीप जैन ---------- १७

आचार्य सिद्धसेनगणि और तत्वार्थभाष्य वृत्ति – डॉ. अमरा जैन ----------१८

वर्तमान समाज और भगवान महावीर का अनेकान्त सिद्धान्त – श्रीचन्द चोरडिया ---------- २४

तत्वामिव्यक्ति निर्बाध शैली-स्याद्वाद – रमेश मुनि शास्त्री ---------- २८

जैन दर्शन के मूल तत्त्वों का संक्षिप्त स्वरूप – साध्वी धर्मशीलाश्रीजी ---------- ३४

व्यवहार, निश्चयनय व अनेकान्तवाद – श्रीमती फूलकुंवर जैन ---------- ३६

हम और हथकड़ी – बापूलाल सकलेचा---------- ३८

अपरिग्रह-एक अनुचिन्तन – आचार्य आनन्द ऋषिजी ---------- ३९

अपरिग्रह – डॉ. वीणा जैन ---------- ४१

भगवान् महावीर की वाणी में अपरिग्रह – प्रो. श्रीचन्द जैन ---------- ४३

जैन, बौद्ध और गीतादर्शन में मोक्ष का स्वरूप-एक तुलनात्मक अध्ययन – डॉ. सागरमल जैन ---------- ४५

कर्म की शक्ति औऱ उसका स्वरूप – उपाध्याय अमर मुनिजी ---------- ५२

जैन दर्शन में कर्मवाद की महत्ता – साध्वी प्रियदर्शनाश्रीजी ---------- ६१

जैन दर्शन में पुद्गल का स्वरूप – चन्द्रकान्त संघवी ---------- ६४

जैन कर्म सिद्धान्त-तुलनात्मक विवेचन – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी ---------- ६५

जैन दर्शन का तात्त्विक पक्ष-वस्तु स्वातन्त्र्य – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल ---------- ६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आध्यात्मिक विकास के सोपान - यतीन्द्रविजयजी ---------- ७०
कर्मणाधर्म-समाजवाद – बशीर अहमद ---------- ७३
रीता दिन – दिनकर सोनवलकर ---------- ७४
गुणस्थान-आत्मोत्थान के सोपान – मुनि महेन्द्रकुमारजी ---------- ७५
जैन धर्म में स्त्रियों के अधिकार – पं. परमेष्ठीदास जैन ---------- ७९
आत्म विश्वास का तुलनात्मक अध्ययन – साध्वी सुदर्शनाश्रीजी ----------८१
ध्यान साधना-आधुनिक सन्दर्भ – डॉ. नरेन्द्र भानावत ---------- ८५
आत्मा आनन्द धन्य स्वरूप है – रतनलाल कांठेड---------- ८९
वैराग्य – स्वामी शिवानन्दजी शास्त्री ---------- ९१
उपवास और आध्यात्मिक विकास – मानकलाल गिरिया ---------- ९३
खुशियों के अम्बार सजाऊँ - श्रीमती कोकिला भारतीय ---------- ९४
नमस्कार ज्योति – मफतलाल संघवी ---------- ९५
कुछ मुक्ताएँ – पं. शान्तप्रकाश ---------- ९६
जैन धर्म का भारतीय संस्कृति में योगदान – बालचन्द कोठारी ---------- ९७
जैन साहित्य-श्वेताम्बर, दिगम्बर – डॉ. रमेशचन्द्र राय ---------- १००
जैन साहित्य में लोक कथा के तत्त्व – डॉ. बसन्तीलाल बम ---------- १०३
जैन गणित की अप्रतिम धाराएँ – प्रो. लक्ष्मीचन्द्र जैन ---------- १०५
मालव का जैन वाङ्मय – डॉ. तेजसिंह गौड़ ---------- १०६
चतुर्विंशति पट्ट या चौबीसी – शैलेन्द्रकुमार रस्तोगी ----------११२
महावीर पूर्व जैन धर्म की परम्परा-आत्मानुसन्धान की यात्रा – डॉ. महावीरलाल जैन --------- ११४
समाज क्या प्रगति के पथ पर है – मुनि श्री विचक्षणविजयजी ----------११८
कामनाओं का अन्त करना ही दुःख का अन्त करना है – मानव मुनि ---------- ११९
महावीर युगीन काल – डॉ. एस. एम. पहाड़िया ---------- १२०
भारतीय कला में पुराण-कथाएँ – प्रो. कृष्णदत्त वाजपेयी ---------- १२३
रामायण की लोकप्रियता – वर्द्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री ---------- १२९
अमरीकी संग्रहालयों एवं निजी संग्रहों में जैन प्रतिमाएँ – डॉ. ब्रजेन्द्रनाथ वर्मा ----------१३१
जैन योग-एक चिन्तन – देवेन्द्र मुनि शास्त्री ---------- १३४
महिला समाज को महावीर-दर्शन की देन – डॉ. श्रीमति शान्ता भानावत ---------- १३७
आकार का महत्व – श्री भद्रीलाल जैन ---------- १४०
ओसवाल जाति का इतिहास – श्री अगरचन्द नाहटा ---------- १४३
जैन समाज की दिशा-उत्थान या पतन – श्री सी. बी. भगत ---------- १४६
जन समाज द्वारा धार्मिक शिक्षण व्यवस्था – श्री सौभाग्यमल जैन ---------- १४७
जैन कौन – सौ. पारसरानी महेता ---------- १४८
साधना और सम्यग्दर्शन – मुनि अजितकुमार ---------- १४९
जैन धर्म का मूलाधार-सम्यग्दर्शन – डॉ. प्रेमसिंह राठोड़ ---------- १५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री तीर्थंकर परमात्माओं की लोकोत्तर चार उपमाएँ – श्री विजय सुशिल सूरि ---------- १५९
तीर्थंकरों के लांछन और शासन देवता – श्री बालचन्द्र जैन ---------- १६२
महाराष्ट्र की संस्कृति पर जैनियों का प्रभाव – रिषभदास राँका ---------- १६४
जैन कथा साहित्य-एक पर्यवेक्षण – श्री जयन्तविजय ---------- १७३
जैन विद्वानों द्वारा हिन्दी में रचित कुछ वैद्यक ग्रन्थ – आचार्य राजकुमार जैन ---------- १७८
जैन धर्म – यशवंतकुमार नांदेचा ---------- १८२
जीवरक्षा-सृष्ठि सन्तुलन के लिए आवश्यक – हुकमचन्द पारेख---------- १८४
जैन योग-एक चिन्तन – देवेन्द्र मुनि शास्त्री ---------- १८६
अध्यात्म वैभव – मुनि नरेन्द्र विजय ---------- १८९
ललित विस्तारगत वस्तु विचार-तत्कर्तुश्च समासत-परिचय – श्री भद्रङ्करसूरिजी ---------- १९१

पंचम खण्ड – जैन तीर्थ-शिल्प कथाएँ

रेगिस्तान का प्राचीन तीर्थ श्री भांडवाजी – श्री भूरचन्द जैन ----------३
चमत्कारों की दुनिया में श्री महुरि पार्श्वनाथ – मुनि श्री राजरत्नसागरजी महाराज ---------- ५
तीर्थ क्षेत्र श्री लक्ष्मणीजी – मुनि श्री जयंतविजयजी ---------- ७
सांडेराव के जैन मन्दिर – वैद्यराज चुनिलाल ---------- ९
जैसलमेर जैन मन्दिर एवं उनकी कलात्मक समृद्धि – विजयशंकर श्रीवास्तव ---------- १०
चित्र और सम्भूति मुनि – राजमल लोढ़ा ----------१३

षष्ठम खण्ड – परिषद् दर्शन

मधुकर मधुमय जीवन कर दो – निर्मल सकलेचा---------- २६
प्रार्थना – राजमल नांदेचा ---------- २७
आत्म शुद्धि गीत – महेन्द्र भण्डारी ---------- २८
मंगल गीत – डॉ. शोभनाथ पाठक ---------- २८
अ. भा. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् – मुनि श्री लेखेन्द्रशेखरविजयजी ---------- २९
अ. भा. राजेन्द्र जैन नवयुकत परिषद् के उद्देश्य – श्री कांतिलाल जैन ---------- ३०
परिषद् की उपलब्धियाँ – श्री सौभाग्यमल सेठिया ----------३१
राजेन्द्र जैन नवयुकवक परिषद् का उद्गम एवं विस्तार – श्री भँवरलाल छाजेड़ ---------- ३३
परिषद् की समाज में आवश्यकता – श्री जुगराज के. जैन ---------- ३५
परिषद् कान्ति का शंखनाद – डॉ. प्रेमसिंह राठोड़ ---------- ३६
समाज में परिषद् का आर्थिक योगदान – श्री शान्तिलाल सुराणा ---------- ३७
परिषद् क्यों – श्री बालचन्द जैन ---------- ३९
रे मान मत कर – श्री मांगीलाल बुरड़ ---------- ४०
परिषद् की चौखट से – श्री सुरेन्द्र लोढ़ा ---------- ४१
परिषद्-उद्भ,स प्रेरणा, प्रगति – श्री हस्ति सी. कर्नावट ---------- ४४
परिषद् की उपादेयता – श्री सुजानमल सोनी---------- ४६
परिषद् शाखाएँ ---------- ४७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य श्री यतीन्द्र और परिषद् ---------- ४९
परिषद् के अधिवेशन ---------- ६४
परिषद् कार्य कसमिति की बैठकें ---------- ६५
केन्द्रीय अधिवेशन ---------- ६६
प्रतियोगिताएँ-एक रपट – श्री नलिनकुमार संघवी ---------- ६८
शाश्वत धर्म – श्री सुरेन्द्र लोढ़ा ---------- ६९
परिषद् के चार उद्देश्य - ---------- ७२
यज्ञ का घोड़ा – श्री भँवरलाल नाँदेचा ---------- ७३
हमें गन्तव्य पर पहुँचना है – श्री फकीरचन्द जैन ---------- ७५
जैन दर्शन-वार्तालाप – श्रीमती चन्द्रकान्ता भण्डारी ---------- ७६
ग्रन्थ प्रकाशन के सहयोगी दानदाता ---------- ७७

सप्तम खण्ड – गुजराती विभाग

પરમ યોગી શ્રીમદ્વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિજી મહારાજ – મુનિ શ્રી જયન્તવિજયજી ---------- ૧
સ્વાવલમ્બનની પ્રેરણામૂર્તિ - ---------- ૫
પૂ. ગુરુદેવની સ્મૃતિથી સર્જન – શ્રી કીર્તિલાલ હાલચંદ વોરા ----------૬
શ્રેયમાર્ગી શ્રાવિકા અને આદર્શ આરાધિકા સુલસા – શ્રી પુનમચંદ નાગરદાસ દોશી ----------૮
જૈન ધર્મના પ્રચાર માટે નાટક-કલાનો ઉપયોગ – પૂ. મુનિ શ્રી શીલચંદ્ર વિજયજી----------૧૧
શ્રી જિનાગમ અને જૈન સાહિત્ય – શ્રી કપૂરચંદ રણછોડદાસ વારૈયા ---------- ૧૫
દ્વાદશાર નયચક્ર-એક ચિન્તન – આચાર્ય શ્રી વિક્રમસૂરીશ્વરજી મહારાજ ---------- ૧૮
જય શ્રી સ્થંભન પાર્શ્વનાથ-એક પરિચય - ----------૨૧
ભગવાન મહાવીરે ચૌથેલોમૂલ માર્ગ – મુનિ શ્રી અમરેન્દ્રવિજયજી ----------૨૨
કર્મવાદની સામાન્ય રૂપરેખા – શ્રી ખૂબચંદ કેશવલાલ પારેખ ---------- ૨૫
સાધના માર્ગનો સક્રિય શુભારમ્ભ અર્થાત્ દેશવિરતિ ધર્મ (બાર વ્રતો)– સાધ્વી શ્રી
સ્વયંપ્રભાશ્રીજી ----------33
રાજનગર અને ગુરુદેવ – શ્રી બચુભાઈ ચીમનલાલ થારૂ ---------- ૩૬
ગૌરવવન્તી ધરતી-થરાદની – શ્રી ચંદ્રકાન્ત ભૂદરદાસ વોરા ---------- ૩૭

अष्टम खण्ड – अंग्रेजी

Role of Jainism in Modern India – Dr. B. H. Kapadia----------3
Jainism in South India – T. K. Tukol ----------6
Jainism in Tamilnad – S. Gajpathi ---------- 12
The Attendant Devis of Jinas – Dr. C. L. Prabhakar ---------- 24
Evolution of the Sanskrit Stage – Dr. N. P. Unni---------- 29
Jainism in South India – G. V. Raju ---------- 33
Rajendra Suri-A Reformer and Revivalist – B. N. Luniya ---------- 38

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org